रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन

फरवरी 2 2025 FEBRUARY

पंचांग पर अपना नाम छपवाकर बाँटने वाले इच्छुक (100 प्रति से अधिक) कीटि, क्लब, संस्था व व्यापारिक वर्ग प्रकाशक से सम्पर्क करें 07233013544, उन्हें पंचांग उचित मूल्य पर दिया जायेगा।

कचौड़ीगली, वाराणसी, फोन नं. : 0542-2392543, 2392471

विक्रम संवत् 2081	श्रीशालिवाहन शाके 1946	फसली सन् 1432	इस्लामी हिजरी सन् 1446	बंगला संवत् 1431	नेपाली संवत् 1145
माघ शुक्ल 3 से फाल्गुन शुक्ल 1 तक। ता. 13 से फाल्गुन मास प्रारम्भ।	राष्ट्रीय माघ 12 से फाल्गुन 9 तक। ता. 20 से फाल्गुन मास प्रारम्भ।	प्र. माह 19 से प्र. फागन 16 तक। ता. 13 से प्र. फागन मास प्रारम्भ।	साबान 2 से साबान 29 तक।	माघ 18 से फाल्गुन 16 तक। ता. 13 से फाल्गुन मास प्रारम्भ।	माघ 19 गते से फाल्गुन 16 गते तक। ता. 13 से फाल्गुन मास प्रारम्भ।

दूध का हिसाब

ता.	सुबह	शाम	ता.	सुबह	शाम
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13			योग		
14					
15					
16					

धुलाई का हिसाब

दिनांक	विवरण	कपड़ा	संख्या

अखबार का हिसाब

दिनांक	1	2	3
4	5	6	7
8	9	10	11
12	13	14	15
16	17	18	19
20	21	22	23
24	25	26	27
28			

भद्रा-विचार

ता.1 रात 12:56 से ता.2 दिन 11:53 तक।
ता.4 रा.शे. 4:54 से ता.5 दिन 3:45 तक।
ता.8 दिन 9:43 से रात 8:55 तक।
ता.11 सायं 6:30 से ता.12 प्रातः 6:36 तक।
ता.15 दिन 9:24 से रात 10:13 तक।
ता.18 रा.शे.4:25 से ता.19 सायं 5:23 तक।
ता.22 रात 9:42 से ता.23 दिन 10:5 तक।
ता.26 दिन 9:19 से रात 8:44 तक।

तेजी-मंदी

धान्य-गल्ला, शक्कर, गुड़, तेल, घी में तेजी के बाद मन्दी आयेगी। सोना, चाँदी में तेजी, गेहूँ, चावल, रुई, वस्त्र में तेजी के बाद मंदी रहेगी।

मूल विचार

ता.2 को रेवती रात 3:39 से ता.4 को अश्विनी रात 12:20 तक।
ता.11 को श्लेषा सायं 6:23 से ता.13 को मघा रात 8:27 तक।
ता.21 को ज्येष्ठा दिन 12:30 से ता.23 को मूल दिन 3:26 तक।

सूर्य नक्षत्र

ता.6 को धनिष्ठा दिन 12:35 से।
ता.12 को कुम्भ राशि रा.शे. 2:11 से।
ता.19 को शतभिषा सायं 4:12 से।

पंचक विचार

मासारम्भ से ता.3 को रात 2:0 तक। ता.26 को रात 3:50 से मासान्त तक।

फरवरी 2025

वार					
रवि SUN		माघ शुक्ल चतुर्थी दिन 11:53 तक, भद्रा — **2** — मीन चं. उ.भा. रात 3:39 तक	माघ शुक्ल द्वादशी रात 7:41 तक — **9** — मिथुन चं. आर्द्रा सायं 6:21 तक	फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी रात 12:9 तक — **16** गणेश चतुर्थी व्रत — कन्या चं. हस्त रात 2:46 तक	फाल्गुन कृष्ण दशमी दिन 10:5 तक, भद्रा — **23** — धनु चं. मूल दिन 3:26 तक
सोम MON		माघ शुक्ल पंचमी दिन 9:36 तक — **3** वसंत पंचमी, सरस्वती पूजा — मेष चं. रात 2:0 से, रेवती रात 2:0 तक	माघ शुक्ल त्रयोदशी सायं 6:51 तक — **10** प्रदोष व्रत — कर्क चं. दि. 12:11 से, पुनर्वसु सा. 6:8 तक	फाल्गुन कृष्ण पंचमी रात 2:16 तक — **17** — तुला चं. सायं 4:3 से, चित्रा रा.शे. 5:22 तक	फाल्गुन कृष्ण एकादशी दिन 10:20 तक — **24** एकादशी व्रत — मकर चं. रात 10:14 से, पू.षा. सायं 4:10 तक
मंगल TUE		माघ शुक्ल षष्ठी, भद्रा — **4** — मेष चं. अश्विनी रात 12:20 तक	माघ शुक्ल चतुर्दशी सायं 6:30 तक, भद्रा — **11** — कर्क चं. पुष्य सायं 6:23 तक	फाल्गुन कृष्ण षष्ठी रात 4:25 तक, भद्रा — **18** — तुला चं. स्वाती समस्त	फाल्गुन कृष्ण द्वादशी दिन 10:5 तक — **25** प्रदोष व्रत — मकर चं. उ.षा. सायं 4:25 तक
बुध WED		माघ शुक्ल अष्टमी रात 2:36 तक, भद्रा — **5** — वृष चं. रात 4:20 से, भरणी रात 10:42 तक	माघ शुक्ल पूर्णिमा सायं 6:42 तक, भद्रा — **12** माघ पूर्णिमा, रविदास जयन्ती, कुम्भ संक्रान्ति — सिंह चं. रात 7:10 से, श्लेषा रात 7:10 तक	फाल्गुन कृष्ण सप्तमी समस्त, भद्रा — **19** — वृश्चिक चं. रात 3:46 से, स्वाती प्रातः 7:57 तक	फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी दिन 9:19 तक, भद्रा — **26** महाशिवरात्रि व्रत — कुम्भ चं. रात 3:50 से, श्रवण सायं 4:10 तक
गुरु THU		माघ शुक्ल नवमी रात 12:28 तक — **6** — वृष चं. कृत्तिका रात 9:13 तक	फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा रात 7:25 तक — **13** — सिंह चं. मघा रात 8:27 तक	फाल्गुन कृष्ण सप्तमी प्रातः 6:22 तक — **20** — वृश्चिक चं. विशाखा दिन 10:22 तक	फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी दिन 8:9 तक — **27** अमावस्या — कुम्भ चं. धनिष्ठा दिन 3:29 तक
शुक्र FRI		माघ शुक्ल दशमी रात 10:32 तक — **7** — वृष चं. रोहिणी रात 7:56 तक	फाल्गुन कृष्ण द्वितीया रात 8:35 तक — **14** — कन्या चं. रात 4:43 से, पू.फा. रात 10:10 तक	फाल्गुन कृष्ण अष्टमी दिन 8:2 तक — **21** — वृश्चिक चं. अनुराधा दिन 12:30 तक	फाल्गुन कृ. अमावस्या प्रातः 6:35 तक, प्रतिपदा रा.शे. 4:42 तक — **28** अमावस्या — कुम्भ चं. शतभिषा दिन 2:30 तक
शनि SAT	माघ शुक्ल तृतीया दिन 1:59 तक, भद्रा — **1** — मीन चं. रात 11:16 से, पू.भा. रा.शे. 5:12 तक	माघ शुक्ल एकादशी रात 8:55 तक, भद्रा — **8** एकादशी व्रत — मिथुन चं. प्रातः 7:27 से, मृगशिरा सायं 6:59 तक	फाल्गुन कृष्ण तृतीया रात 10:13 तक, भद्रा — **15** — कन्या चं. उ.फा. रात 12:20 तक	फाल्गुन कृष्ण नवमी दिन 9:17 तक, भद्रा — **22** — धनु चं. दिन 2:12 से, ज्येष्ठा दिन 2:12 तक	

विवाह मुहूर्त

ता.1,2,3,6,7,8,12,13,14,15,16,17,18,19,20,21,22,23,24,25।

तारीख :	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28
सूर्योदय :	6:34	33	32	32	31	31	30	29	29	28	27	27	26	25	25	24	23	23	22	21	20	20	19	18	18	17	16	15
सूर्यास्त :	5:26	27	28	28	29	29	30	31	31	32	33	33	34	35	35	36	37	37	38	39	40	40	41	42	42	43	44	45

व्रत-त्यौहार

1.शनि- वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, तिल चौथ, वरद चतुर्थी।
3.सोम- वसंत पंचमी, सरस्वती पूजा, वागीश्वरी देवी प्राकट्योत्सव।
4.मंगल- अचला सप्तमी व्रत, रथ सप्तमी, सूर्य पूजा।
6.गुरु- महानन्दा नवमी, धनिष्ठा के सूर्य दिन 12:35, हरमू ब्रह्मदेव जयंती-चैनपुर।
8.शनि- जया एकादशी व्रत-सबका।
9.रवि- आमलकी द्वादशी, तिल द्वादशी।
10.सोम- सोम प्रदोष व्रत।
12.बुध- स्नान दान व्रत की माघी पूर्णिमा, कुम्भ संक्राति रा.शे. 2:11, संत रविदास जयंती।
13.गुरु- मु.पर्व शबेबरात।
16.रवि- संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात 9:12।
19.बुध- शतभिषा के सूर्य सा. 4:12।
21.शुक्र- सीताष्टमी व्रत, जानकी प्राकट्योत्सव।
23.रवि- स्वा.दयानन्द सरस्वती जयंती।
24.सोम- विजया एकादशी व्रत सबका।
25.मंगल- भौम प्रदोष व्रत।
26.बुध- महाशिवरात्रि व्रत, वैद्यनाथ प्राकट्योत्सव, काशी विश्वनाथ दर्शन-पूजन।
27.गुरु- श्राद्ध की अमावस्या।
28.शुक्र- स्नान दान की अमावस्या।

विस्तृत पर्व-त्यौहार जयन्ती सितम्बर के पृष्ठ पर देखें

राशि - फल

मेष- बौद्धिक क्षमता में कमी आयेगी, जीवन में कई काम बन जायेंगे।
वृष- बना बनाया काम प्रभावित होगा, नौकरी व व्यवसाय में परिवर्तन होगा।
मिथुन- नेत्र विकार से कष्ट, भूमि-सम्पत्ति-वाहन क्रय-विक्रय में प्रगति होगी।
कर्क- कुटुम्ब में कलह बढ़ेगा, कार्यों में बाधायें, मानसिक अशांति रहेगी।
सिंह- सामाजिक कार्यों में अरुचि होगी, माता-पिता के स्वास्थ्य में बाधा होगी।
कन्या- व्यवसाय में हानि हो सकती है, स्वजनों तथा मित्रों से सहयोग मिलेगा।
तुला- वित्तीय लेन-देन में सतर्क रहें, नौकरी में उन्नति का योग है।
वृश्चिक- स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा, दुर्घटना तथा अनावश्यक विवाद से कष्ट होगा।
धनु- पदोन्नति सम्भव है, कारोबार में मंदी, सरकारी कर्मचारियों की व्यस्तता रहेगी।
मकर- यह माह संघर्षपूर्ण रहेगा, उन्नति पूर्ण कार्यों एवं व्यवसाय में बाधा सम्भव है।
कुम्भ- श्वाँस व उदर रोग से कष्ट होगा, अन्य स्रोत से आकस्मिक लाभ होगा।
मीन- हृदय व पेट की बीमारी बढ़ सकती है, कारोबार में मंदी, यात्रा में कष्ट सम्भव है।

आकाशी-लक्षण

पर्वतों पर बर्फबारी, उत्तरी-पूर्वी क्षेत्रों में तेज हवा के साथ वर्षा, उत्तर व मध्य भारत में हाड़ कपाऊँ सर्दी, कोहरा-पाला से फसल की हानि, उत्तरी-पूर्वी क्षेत्रों में वर्षा का अभाव होगा।

जनवरी-2025

रवि		5	12	19	
सोम		6	13	20	27
मंगल		7		21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरु	2	9	16		30
शुक्र	3	10	17	24	31
शनि	4	11	18	25	

विज्ञापन 2025

← विज्ञापन हेतु स्थान-10½" × 2"

पंचांग पर नाम पता छपवाकर बाँटने वाले इच्छुक कीटि, क्लब, संस्था व व्यापारिक वर्ग प्रकाशक से सम्पर्क करें पंचांग साइज 11"×17" चार रंग में छपा हुआ। मो. नं. 07233013544 0542-2392543,2392471

मार्च-2025

रवि		2	9	16	23
सोम		3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6		20	27
शुक्र		7		21	28
शनि	1	8		22	29

नवग्रह पीड़ा (रोग) निवारणार्थ यन्त्र-मन्त्र-रत्न एवं जड़ी धारण तथा व्यावसायिक वस्तुएँ

सूर्य

6	1	8
7	5	3
2	9	4

सूर्य की पीड़ा से – बुखार, कमजोरी, दिल का दौरा, पेट सम्बन्धी बिमारियाँ, आँखों की बिमारी, चर्मरोग, घाव लगना, दाँरे पड़ना तथा हिस्टीरिया आदि।
वैदिक जप मन्त्र—ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।
तांत्रिक मन्त्र— ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।
जप संख्या—7 हजार। कलियुग में जप संख्या—28 हजार।
मध्य भाग्य, वर्तुल मण्डल, अंगुल 12, कलिंग देश, कश्यप गोत्र, रक्त वर्ण सिंह राशि का स्वामी।
वाहन—सप्ताश्व। समिधा—मदार।
दान-द्रव्य—माणिक्य, सोना, ताँबा, गेहूँ, घी, गुड़, केशर, लाल कपड़ा, लाल फूल, मूँगा लाल, गौ लाल तथा चन्दन लाल।
दान का समय—रविवार को अरुणोदय (सूर्योदय) काल।
धारण रत्न—माणिक्य 3 या 4 रत्ती।
उपरत्न—तामड़ा या कण्टकिज धारण करें। इसके अभाव में सूर्य का यन्त्र अथवा बिल्व वृक्ष की जड़ गले या बाहु में धारण करें।
व्यावसायिक पदार्थ—राज्य प्रशासनिक कार्य, इमारती लकड़ी, सोना, रूई, अनाज।
व्रत उपवास— सूर्यदेव की प्रसन्नता हेतु रविवार का व्रत करें तथा इसमें लाल फूल अर्पित करना चाहिए।
विशेष जानकारी के लिए 'रविवार व्रत कथा' मँगाकर पढ़ें।

चन्द्र

7	2	9
8	6	4
3	10	5

चन्द्र की पीड़ा से—अनिद्रा, कफ सम्बन्धी, पाचन संस्थान का बिगड़ना, अजीर्ण, ठंढक, बुखार, गठिया, मानसिक असन्तुलन, पेट की बिमारियाँ, जलघात तथा जानवरों का हमला इत्यादि।
वैदिक जप मन्त्र—ॐ इमं देवा ऽअसपत्न ठं.सुवध्यं महते क्षत्राय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रम मुष्यै विष एष वोऽमीराजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ठं. राजा।।
तांत्रिक मन्त्र—ॐ ऐं ह्रीं सोमाय नमः।
जप संख्या— 11 हजार। कलियुग में जप संख्या— 44 हजार।
अग्निकोण, चतुरस्र मण्डल, अंगुल 4, यमुना तटवर्ती देश, अत्रि गोत्र, श्वेत वर्ण। कर्क राशि का स्वामी। वाहन—हरिण। समिधा—पलास।
दान-द्रव्य—मोती, सोना, चाँदी, चावल, मिश्री, दही, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, शंख, कपूर, बांस की डलिया, सफेद बैल तथा सफेद चन्दन।
दान का समय— सोमवार को प्रदोष (संध्या) काल।
धारण रत्न— मोती 4-5 रत्ती।
अभाव में उपरत्न— गोदन्ती या चन्द्रकान्त मणि धारण करें अथवा चन्द्रमा का यन्त्र तथा खिरनी की जड़ को सफेद वस्त्र में बाँधकर बाहु या गले में धारण करें।
व्यावसायिक पदार्थ— जल से सम्बन्धित व्यवसाय, कांच के बने सामान।
व्रत-उपवास- चन्द्रपीड़ा निवृत्ति हेतु सोमवार व्रत या बत्तीस पूर्णिमा व्रत करना चाहिए। श्वेत पदार्थ, श्वेत पुष्प चढ़ावें।
विशेष जानकारी हेतु 'सोमवार व्रत कथा' एवं पूर्णिमा व्रत' मँगावें।

मंगल

8	3	10
9	7	5
4	11	6

मंगल की पीड़ा से—गले की बिमारी, कण्ठ रोग, फोड़ा, फुन्सी, रक्त विकार, गठिया के बुखार, आँखों की बिमारी, दाँरे पड़ना, सिर दर्द तथा रक्त सम्बन्धी रोग इत्यादि।
वैदिक जप मंत्र— ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ठं. रेना ठं.सि जिन्वति।।
तांत्रिक मन्त्र— ॐ ह्रीं श्रीं मङ्गलाय नमः।
जप संख्या- 10 हजार।
कलियुग में जप संख्या— 40 हजार।
दक्षिण दिशा, त्रिकोण मण्डल, अंगुल 3, अवन्ति देश, भारद्वाज गोत्र, रक्त वर्ण। मेष-वृश्चिक राशि का स्वामी।
वाहन— भेंड़ा। समिधा—खदिर (खैर)।
दान-द्रव्य— मूँगा, सोना, ताँबा, मसूर, गुड़, गेहूँ, घी, लाल कपड़ा, लाल फूल, कस्तूरी, केशर, लाल बैल तथा लाल चन्दन।
दान का समय— मंगलवार को सबेरे 2 घटी तक।
धारण रत्न— मूँगा 6-7 रत्ती।
उपरत्न— विद्रुम मणि या संगमूँगी अथवा अकीक एवं मंगल का यंत्र या अनन्तमूल वृक्ष की जड़ को लाल कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।
व्यावसायिक पदार्थ— औषधि, घड़ी, ईंट, गेहूँ, भूमि।
व्रत उपवास— मंगल देवता अथवा हनुमान्जी का व्रत करना शुभप्रद है। लाल फूल अर्पण करें। विशेष—'मंगलवार व्रत कथा' पढ़ें।

बुध

9	4	11
10	8	6
5	12	7

बुध की पीड़ा से— दिमागी फितूर, नाक-कान की बिमारी, वात सम्बन्धी बिमारी, पित्तभेद, चर्म रोग, कोढ़, विष तथा ऊँचाइयों से गिरना इत्यादि।
वैदिक जप मन्त्र— ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ठं. सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे-अध्युत्तरस्मिन्। विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।
तांत्रिक मन्त्र—ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।
जप संख्या—9 हजार।
कलियुग में जप संख्या—36 हजार।
ईशान कोण, बाणाकार मण्डल, अंगुल 4, मगध देश, अत्रि गोत्र, हरित वर्ण। मिथुन-कन्या राशि का स्वामी।
वाहन— सिंह। समिधा— अपामार्ग।
दान-द्रव्य— पन्ना, सोना, काँसे का बर्तन, मूँग, खाँड़, घी, हरा कपड़ा, सब फूल, हाथी दाँत, कपूर, शस्त्र तथा फल।
दान का समय— बुधवार को सबेरे 5 घटी तक।
धारण रत्न— पन्ना 3 या 4 रत्ती।
उपरत्न— हरा मरगज अथवा बुध-यन्त्र या विधारा की जड़ हरे डोरे या कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।
व्यावसायिक वस्तुएँ— मूँग, रेशम, सूत, काषी, लेखन सामग्री (स्टेशनरी)।
व्रत उपवास— बुध देव की पीड़ा निवृत्ति हेतु 27 या 108 बुधवार का व्रत करना चाहिए। पुष्प में हरा फूल ग्रहण करें। गौमाता की सेवा, हरा चारा (दूब, पालक आदि) खिलाना लाभदायक होता है।
विशेष जानकारी—'बुधवार व्रत कथा' पढ़िए।

गुरु

10	5	12
11	9	7
6	13	8

गुरु की पीड़ा से— पेट में गैस रहना, बुखार, कान से मवाद गिरना तथा वायुयान दुर्घटना इत्यादि।
वैदिक जप मन्त्र— ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदीदयच्छ वस ऽऋतप्रजा तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।
तांत्रिक मन्त्र—ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।
जप संख्या— 19 हजार।
कलियुग में जप संख्या— 76 हजार।
उत्तर दिशा, दीर्घ चतुरस्र मण्डल, अंगुल 6, सिन्धु देश, अंगिरा गोत्र, पीत वर्ण। धनु-मीन राशि का स्वामी।
वाहन— हाथी। समिधा—पीपल।
दान-द्रव्य— पुखराज, सोना, काँसा, चने की दाल, खाँड़, घी, पीला फूल, पीला कपड़ा, हल्दी, पुस्तक, घोड़ा, भूमि तथा पीला फल।
दान का समय— बृहस्पतिवार को संध्या काल।
धारण रत्न— पुखराज 5-6 रत्ती।
उपरत्न— सुनेहला धारण करें अथवा बृहस्पति का यन्त्र या बभनेठी (भारंगी) की जड़ पीले कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।
व्यावसायिक सामग्री— किराना, वकालत, ब्याज पर पैसा।
व्रत-उपवास— गुरु (बृहस्पति) की पीड़ा निवृत्ति हेतु गुरुवार का व्रत करना चाहिए। इसमें पीली वस्तु, पुष्प से पूजन-अर्चन करना लाभदायक होता है। विशेष—'बृहस्पतिवार व्रत कथा' पढ़ें।

शुक्र

11	6	13
12	10	8
7	14	9

शुक्र की पीड़ा— कोढ़, वात-पित्त-कफ सम्बन्धी, वीर्य विकार, नेत्र पीड़ा, मूत्र पीड़ा, गुदा रोग, गर्भाशय की कमजोरी, पेट का दर्द तथा अण्डकोश की सूजन इत्यादि।
वैदिक जप मन्त्र— ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानठं. शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।
तांत्रिक मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।
जप संख्या—16 हजार।
कलियुग में जप संख्या— 64 हजार।
पूर्व दिशा, षट्कोण मण्डल, अंगुल 9, भोजकट देश, भृगु गोत्र, श्वेत वर्ण। वृष-तुला राशि का स्वामी।
वाहन— अश्व। समिधा- उदुम्बर (गूलर)।
दान-द्रव्य— हीरा, सोना, चाँदी, मिश्री, दूध, चावल, सफेद एवं चित्रित कपड़ा, सफेद फूल, सुगन्ध, दही, सफेद घोड़ा, भूमि तथा सफेद चन्दन।
दान का समय—शुक्रवार को (सूर्योदयकाल)।
धारण रत्न— हीरा 4-5 रत्ती।
उपरत्न-सफेद पुखराज, स्फटिक या जरकन धारण करें। अथवा शुक्र का यन्त्र या मजीठ की जड़ को सफेद कपड़े में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।
व्यावसायिक सामग्री—प्रसाधन सामग्री,फूल,वाहनों की खरीद-बिक्री।
व्रत उपवास— शुक्र ग्रह पीड़ा निवारणार्थ शुक्रवार को व्रत रहना शुभ है। सफेद वस्तुएँ तथा सफेद पुष्प चढ़ाना चाहिए।

शनि

12	7	14
13	11	9
8	15	10

शनि की पीड़ा से— पेट और पैरों की बिमारियाँ, गैस, पेड़ से गिरना, पत्थर से चोट लगना, वाहन दुर्घटना इत्यादि।
वैदिक जप मन्त्र—ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं यो रभिस्रवन्तु नः।।
तांत्रिक मन्त्र—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।
जप संख्या— 23 हजार।
कलियुग में जप संख्या—92 हजार।
पश्चिम दिशा, धनुषाकार मण्डल, अंगुल 2, सौराष्ट्र देश, कश्यप गोत्र, कृष्ण वर्ण। मकर-कुम्भ राशि का स्वामी।
वाहन— गीध। समिधा— शमी।
दान-द्रव्य—नीलम, सोना, लोहा, काला उड़द, काली तिल, कुलथी, तेल, काला कपड़ा, कस्तूरी, महिषी, काली गौ तथा काला खड़ाऊ (जूता-चप्पल इत्यादि)।
दान का समय— शनिवार को मध्याह्नकाल।
धारण रत्न- नीलम 4-5 रत्ती।
उपरत्न-कटैला, काले घोड़े के नाल या नाव के कांटे की अँगूठी, शनि यंत्र काले कपड़े या धागे में बाँधकर गले या बाहु में धारण करें।
व्यावसायिक वस्तुएँ— लकड़ी, लोहा, जूता, कोयला।
व्रत-उपवास— शनि की पीड़ा निवृत्ति हेतु 33 तैंतीस शनिवार का व्रत करना चाहिए। पुष्प काला अर्पण करें। नैवेद्य (प्रसाद) में काले तिल के लड्डू, उरद के बड़े आदि अर्पित करना चाहिए।
विशेष—हनुमानजी एवं शिवजी की उपासना से भी शनि-पीड़ा का शमन होता है।

राहु

13	8	15
14	12	10
9	16	11

राहु की पीड़ा से- दिल का दौरा, दिल की कमजोरी, जहर (विष) देना व लेना, आत्म-हत्या, पाचन संस्थान के रोग इत्यादि।
वैदिक जप मंत्र— ॐ कयानश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठयाऽवृता।।
तांत्रिक मन्त्र— ॐ ह्रीं राहवे नमः।
जप संख्या— 18 हजार।
कलियुग में जप संख्या— 72 हजार।
नैऋत्य कोण, सूर्पाकार मण्डल, अंगुल 12, राठीनापुर (मलय) देश, पैठीनस गोत्र, कृष्ण वर्ण। कन्या राशि का स्वामी।
वाहन— व्याघ्र। समिधा— दूर्वा।
दान-द्रव्य—गोमेद, सोना, रत्न, सीसा, तिल, सरसों का तेल, सप्त धान्य, उरद, कम्बल, नीला कपड़ा, तलवार, घोड़ा एवं सूप, काला फूल, लौह उपकरण, तिल भरा ताम्रपत्र।
दान-समय— रात्रि में।
धारण रत्न— गोमेद 6-7 रत्ती।
उपरत्न— तुरसावा धारण करें अथवा राहु का यन्त्र या सफेद चन्दन की जड़ काले कपड़े में बाँधकर धारण करें।
व्यावसायिक वस्तु— तेल, अलसी, चना, हड्डी के सामान।
व्रत उपवास— शनिवार को व्रत में नीला पुष्प अर्पण करना चाहिए।

केतु

14	9	16
15	13	11
10	17	12

केतु की पीड़ा से— घाव होना, दाँत का सड़ जाना, जल जाना और पसदायक सारी बिमारियाँ एवं गर्भपात केतु से ही होता है।
वैदिक जप मंत्र— ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।
तांत्रिक मन्त्र— ॐ ऐं ह्रीं केतवे नमः।
जप संख्या— 17 हजार।
कलियुग में जप संख्या— 68 हजार।
वायव्य कोण, ध्वजाकार मण्डल, अंगुल 6, अन्तर्वेदी (कुश) देश, जैमिनी गोत्र, धूम्र वर्ण। मीन राशि का स्वामी।
वाहन— कबूतर। समिधा— शमी या दूर्वा।
दान-द्रव्य— लहसुनिया, सोना, लोहा, तिल, सप्तधान्य, काला कपड़ा, धूमिल तेल, धूमिल फूल, नारियल, कम्बल, बकरा।
दान का समय— रात्रि में।
धारण रत्न— लहसुनिया 7, 9 रत्ती।
उपरत्न- गोदन्ती या लाजावर्त धारण करें अथवा केतु का यन्त्र या असगन्ध वृक्ष की जड़ को काले कपड़े में बाँधकर गले या भुजा में धारण करें।
व्यावसायिक वस्तुएँ— अभ्रक, चावल, फिल्म उद्योग, राजनीति।
व्रत उपवास— काला फूल अर्पित करें।

मेषादि राशियों के लिए रत्न धारण विधान

राशि	स्वामी	रत्न	उपरत्न	वजन	धारणदिन
मेष	मंगल	मूँगा	लाल अकीक	6 रती	मंगलवार
वृष	शुक्र	हीरा	स्फटिक	4 रती	शुक्रवार
मिथुन	बुध	पन्ना	हरा मरगज	3 रती	बुधवार
कर्क	चन्द्रमा	मोती	गोदन्ती	4 रती	सोमवार
सिंह	सूर्य	माणिक्य	तामड़ा, कैटकिज	3 रती	रविवार
कन्या	बुध	पन्ना	हरा मरगज	3 रती	बुधवार
तुला	शुक्र	हीरा	स्फटिक	4 रती	शुक्रवार
वृश्चिक	मंगल	मूँगा	लाल अकीक	6 रती	मंगलवार
धनु	बृहस्पति	पुखराज	सुनेहला	5 रती	गुरुवार
मकर	शनि	नीलम	कटैला या काले घोड़े के नाल की अंगूठी	4 रती	शनिवार
कुम्भ	शनि	नीलम	"	4 रती	शनिवार
मीन	बृहस्पति	पुखराज	सुनेहला	3 रती	गुरुवार
राहु	कन्या	गोमेद	तुरसावा	8 रती	शनि, बुध
केतु	मीन	लहसुनिया	गोदन्ती या लाजावर्त	4 रती	शनि, बुध

राशियों के गुण

राशि	राशितत्व	दिशा	रंग	अंक	स्वरूप
मेष	अग्नि	पूर्व	लाल	9	चर
वृष	पृथ्वी	दक्षिण	श्वेत	6	स्थिर
मिथुन	वायु	पश्चिम	हरा	5	द्विस्वभाव
कर्क	जल	उत्तर	श्वेत	2	चर
सिंह	अग्नि	पूर्व	पीला	1	स्थिर
कन्या	पृथ्वी	दक्षिण	हरा	5	द्विस्वभाव
तुला	वायु	पश्चिम	श्वेत	6	चर
वृश्चिक	जल	उत्तर	लाल	9	स्थिर
धनु	अग्नि	पूर्व	पीला	3	द्विस्वभाव
मकर	पृथ्वी	दक्षिण	नीला	8	चर
कुंभ	वायु	पश्चिम	नीला	8	स्थिर
मीन	जल	उत्तर	पीला	3	द्विस्वभाव

नक्षत्रों से कष्ट या पीड़ा

1. **अश्विनी**–सोमवार को होने से 21 दिन पीड़ा उपरांत आराम मिलेगा।
2. **भरणी**–बुधवार को भरणी नक्षत्र के समय रोगी होने पर 21 दिन पीड़ा एवं महाकष्ट होगा।
3. **कृत्तिका**–गुरुवार को यह नक्षत्र होने पर 18 दिन के बाद ही आराम प्राप्त होगा।
4. **रोहिणी**–शनिवार को होने से रोगी को 7 दिन पीड़ा होगी।
5. **मृगशिरा**–जब यह नक्षत्र शनि, रवि या सोमवार को पड़े तो अत्यधिक कष्ट एवं पीड़ा होती है। देर से आराम मिलता है। अतः नक्षत्र शांति करा लेना चाहिये।
6. **आर्द्रा**–मंगलवार या शुक्रवार को होने से महाकष्ट होता है। शांति करावें।
7. **पुनर्वसु**–बुधवार या शनिवार को होने से 25 दिन के बाद आराम होता है।
8. **पुष्य**–शनिवार को पुष्य रहने से 13 दिन कष्टप्रद होते हैं।
9. **श्लेषा**–सोमवार या शुक्रवार को पड़ने से अत्यन्त कष्ट होता है। शांति अवश्य करावें।
10. **मघा**–रवि, बुध या शनि को पड़ने से 11 दिन पीड़ा के बाद ही आराम होता है।
11. **पूर्वा फाल्गुनी**–सोम या गुरु को पड़ने से 11 दिन की पीड़ा के बाद लाभ होता है।
12. **उत्तरा फाल्गुनी**–सोम या गुरु को पड़ने से 11 दिन की पीड़ा के उपरांत लाभ होता है।
13. **हस्त**–रवि, शनि या बुध को पड़ने से 15 दिन रोग पीड़ा रहेगी।
14. **चित्रा**–सोम या गुरु को पड़ने से 7 दिन बाद स्वास्थ्य लाभ होगा।
15. **स्वाती**–रवि, शनि या बुध को पड़ने से 20 दिन रोग रहेगा।
16. **विशाखा**–रवि, सोम या शनि को पड़ने से अति कष्ट होता है। शांति अवश्य करावें।
17. **अनुराधा**–बुधवार को पड़ने से 8 दिन पीड़ादायक रहेंगे।
18. **ज्येष्ठा**–गुरुवार को पड़ने से 20 दिन रोगग्रस्त रहेंगे।
19. **मूल**–रवि, सोम या शनि को पड़ने से अतिकष्ट है। अतएव शांति करावें।
20. **पूर्वाषाढ़ा**–सोम या बुध को पड़ने से 8 दिन पीड़ा होगी।
21. **उत्तराषाढ़ा**–गुरु को पड़ने से 9 दिन बाद स्वास्थ्य लाभ होगा।
22. **श्रवण**–रवि या शनि को पड़ने से 5 दिन पीड़ा होगी।
23. **धनिष्ठा**–रवि या मंगलवार को पड़ने से कष्ट है। अतः शांति करावें।
24. **शतभिषा**–गुरु या शुक्र को पड़ने से 40 दिन रोग ग्रस्त रहेंगे।
25. **पूर्वा भाद्रपद**–रवि, सोम या शनि को पड़ने से अत्यन्त कष्टदायक है, शांति आवश्यक है।
26. **उत्तरा भाद्रपद**–सोम या बुध को होने से 10 दिन पीड़ादायक हैं।
27. **रेवती**–गुरु या शुक्रवार को पड़ने से 18 दिन बाद ही स्वास्थ्य लाभ होगा।